नाटक– आषाढ़ का एक दिन
लेखक– मोहन राकेश

कालिदास : मैंने बहुत बार अपने सम्बन्ध में सोचा है मल्लिका, और हर बार इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि अम्बिका ठीक कहती थी।

बाँहें पीछे की ओर फैल जाती हैं और आँखे छत की ओर उठ जाती हैं।

मैं यहाँ से क्यों नहीं जाना चाहता था? एक कारण यह भी था कि मुझे अपने पर विश्वास नहीं था। मैं नहीं जानता था कि अभाव और भर्त्सना का जीवन व्यतीत करने के बाद प्रतिष्ठा और सम्मान के वातावरण में जाकर मैंन कैसा अनुभव करूँगा। मन में कहीं यह आषंका थी कि वह वातावरण मुझे छा लेगा और मेरे जीवन की दिशा बदल देगा.....और यह आशंका निराधार नहीं थी।

आँखे मल्लिका की ओर झुक आती हैं।

तुम्हें बहुत आश्चर्य हुआ था कि मैं काश्मीर का शासन सँभलाने जा रहा हूँ? तुम्हें यह बहुत अस्वाभाविक लगा होगा। परन्तु मुझे इसमें कुछ भी अस्वाभाविक प्रतीत नहीं होता। अभावपूर्ण जीवन की वह एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी। सम्भवतः उसमें कहीं उन सबसे प्रतिशोध लेने की भावना थी जिन्होंने जब–तब मेरी भर्त्सना की थी, मेरा उपहास उड़या था।

होंठ काटकर उठ पड़ता है और झरोखे के पास चला जाता है।

परन्तु मैं यह भी जानता था कि मैं सुखी नहीं हो सकता। मैंने बार–बार अपने को विश्वास दिलाना चाहा कि कमी उस वातावरण में नहीं मुझमें है। मैं अपने को बदल लूँ, तो सुखी हो सकता हूँ। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। न तो मैं बदल सका, न सुखी हो सका। अधिकार मिला, सम्मान बहुत मिला, जो कुछ मैंने लिखा उसकी प्रतिलिपियाँ देशभर में पहुँच गयीं, परन्तु मैं सुखी नहीं हुआ। किसी और के लिए वह वातावरण और जीवन स्वाभाविक हो सकता था, मेरे लिए नहीं था। एक राज्याधिकारी का कार्यक्षेत्र मेरे कार्यक्षेत्र से भिन्न था। मुझे बार–बार अनुभव होता कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह में पड़कर उस क्षेत्र में अनाधिकार प्रवेश किया है, और जिस विशाल में मुझे रहना चाहिए था उससे दूर हट आया हूँ। जब भी मेरी आँखे दूर तक फैली क्षितिज–रेखा पर पड़तीं, तभी यह अनुभूति

मुझे सालती कि मैं उस विशाल से दूर हट आया हूँ। मैं अपने को आशवासन देता कि आज नहीं तो कल मैं परिस्थितियों पर वश पा लूँगा और समान रूप से दोनों क्षेत्रों में अपने को बाँट दूँगा। परन्तु मैं स्वयं ही परिस्थितियों को हाथों बनता और चालित होता रहा। जिस कल की मुझे प्रतीक्षा थी, वह कल कभी नहीं आया और मैं धीरे–धीरे खण्डित होता गया, होता गया। और एक दिन.....एक दिन मैंने पाया कि मैं सर्वथा दूट गया हूँ। मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसका उस विशाल के साथ कुछ भी सम्बन्ध था।

मोहन राकेश

नाटक– हैमलेट
लेखक– शेक्सपियर

सम्राट : यद्यपि हमारे बड़े भाई को इस संसार से गए अभी कुछ ही दिन बीते हैं, और चाहिए तो हमें यही था कि उनकी याद में सभी दिन–रात आँसू बहाते रहते, लेकिन हमने अपनी बुद्धि के बल से अपने हृदय को इस महान् शोक से इस तरह अपनी शक्ति क्षीण न करने के लिए समझा लिया है। इसी से हम हर समय दुःखी हृदय से अपने भाई की याद करते हुए भी, अपनी इस सुस्थिर अवस्था में हैं। इसलिए तुम, जो पहले हमारी भाभी थीं, अब फिर साम्राज्ञी के रूप में हमारी पत्नी हो और इस राज्य की स्वामिनी हो। इस कारण हमें हर्ष है, लेकिन साथ ही भाई की मृत्यु का दुःख भी है। हम लोगों की आँखों में जहाँ खुशी की एक झलक है वहाँ कितनी ही आँसू की बूँदें भी हैं। इस तरह हमारे हृदय का दुःख और सुख बराबर का है। लेकिन हाँ, महारानी! ठस शादी के लिए तो हमने पूरी तरह से तुम्हारी राय जान ली थी न? तुमने हमारी प्रार्थना को स्वीकार किया, इसके लिए हम तुम्हारे बहुत आभारी हैं। (**कोर्नेलिअस और वोल्टीमैण्ट से**) अब हम तुमसे उन बातों को कहते हैं कि जिन्हें तुम पहले से ही जानते हो। वह नवयुवक फोर्टिन्ब्रास यह जानकार कि हमारे भाई तो इस संसार से चले ही गए हैं और अब हममें क्या ताकत रही है जो उसका मुकाबला कर सकें, बराबर हमें इसके लिए दबा रहा है कि उसके पिता की सारी ज़मीन और सम्पत्ति, जो हमारे भाई ने उससे छीनी थी, उसे वापस दे दें। यह तो उसकी बात रही। अब हम तुमको अपने इस तरह मिलने का कारण बताएँगें। इस युवक फोर्टिन्ब्रास का इस तरह का उपद्रव देखकर हमने इसके चाचा को, जो नार्वे के सम्राट् हैं, लिखा। वे बीमार थे और शक्तिहीन थे। उन्होंने लिखा है कि उन्हें तो अपने भतीजे की इन बातों का पता भी नहीं है। फिर भी हमने उन्हें इसके लिए आगाह कर दिया है कि वह अपने भतीजे को रोकें और कम से कम अपने राज्य से उसकी कोई भी मदद न करें। अब हम तुमकों, कोर्नेलिअस ओर वोल्टीमैण्ट! नार्वे के सम्राट् के पास अपना धन्यवाद संवाद लेकर भेजना चाहते हैं और साथ में यह भी चाहते हैं कि जो कुछ भी तुमसे कहा जाए उसके अलावा किसी तरह की बातें तुम नार्वे के सम्राट् से नहीं करोगे। अच्छा, जाओ; अब जल्दी जाने की तैयारी कर लो और इस कम को पूरा करके अपनी वफादारी का सबूत दो।

शेक्सपियर

कविता
पुरुष／महिला

जलते हुए वन का वसन्त

लेखक– दुष्यंत

गाते–गाते

मैं एक भावुक–सा कवि
इस भीड़ में गाते–गाते चिल्लाने लगा हूँ।

मेरी चेतना जड़ हो गई है–
उस ज़मीन की तरह–
वर्षा में परती रह जाने के कारण–
जिसने उपज नहीं दी
जिसमें हल नहीं लगे।
यह देखते–देखते
कि कितने भयानक भ्रम में जिए हैं बीस वर्ष !
यह सोचते–सोचते
कि मेरा कसूर क्या है
और क्या किया है इन लोगों ने
जो जीवन–भर सभाओं में तालियाँ बजाते रहे,
भूख की शिकायत नहीं की,
बड़ी श्रद्धा से–
थालों में सजे हुए भाषण
और प्रेस की कतरनें खते रहे,
मेरा दिमाग भन्ना गया है !

मैं एक मामूली–सा कवि

इस ग़म में गाते–गाते चिल्लाने लगा हूँ।

नेताओं!

मुझे माफ़ करना

ज़रूर कुछ सुनहले स्वप्न होंगे–

जिन्हें मैंने नहीं देखा।

मैंने तो देखा

जो मशालें उठाकर चले थे

वे तिमिरजयी,

अँधरे की कहानियाँ सुनाने में खो गए।

सहारा टटोलते हुए दोनों दशक

ठोकरें खा–खाकर लँगड़े हो गए।

अपंग और अपाहिज बच्चों की तरह

नंगे बदन

ठंड में काँपता हुआ एक–एक वर्ष

ऐन मेरी पलकों के नीचे से गुज़रा है।

तुम्हारा आभारी हूँ रहनुमाओ !

तुम्हारी बदौलत मेरा देश,

यातनाओं से नहीं,

फूलमालाओं से दबकर मरा है।

मैं एक मामूली–सा कवि

इस खुशी में गाते–गाते चिल्लाने लगा हूँ।

दुष्यंत

कविता
पुरुष／महिला

लहू है कि तब भी गाता है

लेखक– पाश

चिड़ियों का चंबा[1]

चिड़ियों का चंबा उड़कर कहीं न जाएगा
ऐसे ही कहीं इधर–उधर बाँधों से घास खोदेगा
रूखी मिस्सी रोटियाँ ढोएगा
और मैली चुनरियाँ भिगोकर
लुओं से झुलसे चेहरों पर फिराएगा

चिडियों का चंबा उड़कर कहीं नहीं जाएगा
यों ही कहीं इधर–उधर छिपकर अकेला–अकेला रोया करेगा
शापित यौवन के मरसिए गाया करेगा

चिड़ियों के चंबे को जरा भी खबर न होगी
अचानक कहीं लोहे की चोंचों का जाल
उसके जितने आसमान पर बिछ जाएगा
और लंबी उड़ान का उसका सपना
उसके मृगनयनों से भयभीत हो जाएगा

चिड़ियों का चंबा मुफ्त ही परेशान होता है
बाबुल तो डोली भेजकर

उखड़े दरवाजे को ईंटें लगवाएगा

और गुडियाएँ फाड़कर

पसीने से गले हुए कुर्ते पर पैबंद लगवाएगा

चिड़ियों के चंबे को मोह चर्खे का जरा न सताएगा

चिड़ियों का चंबा उड़कर

किसी भी देश न जाएगा

सारी उम्र काँटे चारे के झेलेगा

और सफेद चादर पर लगा

उसकी माहवारी का रक्त उसका मुँह चिढ़ाएगा।

पाश

निम्न नाटकों में से किसी एक नाटक पर साक्षात्कार में बातचीत करने के लिए :–

क्र०सं०	नाटक	नाटककार
01.	अभिज्ञान शाकुन्तलम्	कालिदास
02.	ध्रुव स्वामिनी	जयशंकर प्रसाद
03.	अंधेर नगरी	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
04.	लहरों के राजहंस	मोहन राकेश
05.	ख़ामोश! अदालत जारी है	विजय तेन्दुलकर
06.	कथा एक कंस की	दया प्रकाश सिन्हा
07.	किंग इडिपस	सोफोक्लीज़
08.	रोमियो और जूलियट	विलियम शेक्सपियर
09.	ए डॉल्स हाउस	हेनरिक इब्सन
10.	चैरी का बगीचा	अन्तोन चेख़व